eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

ट्रॉसजेन्डर्स (परलैंगिको) की दशा एवं दिशा – भारतीय समाज के सन्दर्भ में

[1]आलोक कुमार भारद्वाज
[1]सहायक प्रोफेसर हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय समथर (झाँसी) उत्तर प्रदेश

Received: 25 September 2023 Accepted and Reviewed: 30 September 2023, Published : 01 Nov 2023

Abstract

ऐसे व्यक्ति जिसका लिंग उसके जन्म के समय के नियत लिंग से मेल नहीं खाता। इनका व्यवहार भी इनके जन्म के समय के लिंग के बिल्कुल विपरीत जैसा होता है, जैसे कि कोई व्यक्ति जिसका जन्म एक स्त्री के रूप में हुआ हो परन्तु उसका व्यवहार, आचरण उसके लिंग से विपरीत पुरूषों जैसा हो व्यवहार, आचरण एवं लैंगिक स्थिति के अनुसार इनको दो वर्गो में बांट सकते है।

शब्द संक्षेप– भारतीय समाज, ट्रॉसजेन्डर्स (परलैंगिको) समलैगिंक, अवयव, नपुंसक, दशा एवं दिशा।

Introduction

किन्नर समुदाय बाकी टांसजेन्डर लोगों से इस रूप में भिन्न होते है कि वे अपने आप को न तो पुलिंग न स्त्रीलिंग पर तृतीय लिंग मानते है। परन्तु जब हम सामाजिक और विधिक अधिकारों की बात करते है तो सामूहिक रूप से किन्नरो एवं ट्रॉसजेन्डर दोनों वर्गो को सम्मिलित करते है।

1. **क्रॉस डेंसर** :– किसी इंसान का जन्म पुरूष के रूप में हुआ हो पर वह खुद को महिला या लड़की जैसा महसूस करता हो और लड़कियों की तरह कपड़ा पहनता हो इसी प्रकार जब कोई लड़की/महिला स्वयं में पुरूषों या लड़को जैसा व्यवहार करें और उनकी तरह कपड़े पहनने लगे।

2. **टॉन्स सेक्सुअल (पारलैंगिक)** :– इसके अन्तर्गत बाईसेक्सुअल (उभय लिंगी), लेस्बियन (समलैंगिक स्त्री), गे (समलैंगिक पुरूष) आदि आते है। टॉन्स सेक्सुअल :– ऐसे व्यक्ति चाहे वह स्त्री हो या पुरूष खुद की सर्जरी कराकर बाद में अपना लिंग परिवर्तन करवा लेते है इनके बीच विवाह या प्यार के लिये लिंग का चुनाव करने के आधार पर विपरीतलिंगकामी (हेटो सेक्सुअल), लेस्बियन, उभयलिंगी, बाईसेक्सुअल और गे में बांटा गया है।

(अ). **विपरीतलिंगकामी (हेटो सेक्सुअल)** :– आम भाषा में कहा जा सकता है कि कोई स्त्री या लड़की जो पुरूष बन जाये और उसका झुकाव महिलाओं की तरफ हो अथवा कोई पुरूष आथवा लड़का जो स्त्री बन जाये उसका झुकाव पुरूषों की तरफ हो।

(ब). **लेस्बियन (समलैंगिक स्त्री)** :– ऐसी महिला जिसका लगाव किसी लड़की की तरफ होता है,

(स). **बाईसेक्सुअल (उभय लिंगी)** :– जिस व्यक्ति का झुकाव पुरूष एवं स्त्री दोनों के प्रति हो।

(द). **गे (समलैंगिक पुरूष)** :– वह पुरूष जो केवल पुरूष से ही लगाव रखता हो। आजकल प्रायः LGBT समुदाय के विषय में चर्चा की जाती है जो इन्हीं शब्दों के प्रारम्भिक अक्षरों से मिलकर बना है (L-Lesbian, G- Gay B-Bisexual, T- Trans Gender) ध्यान देने वाला तथ्य

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

यह है कि किन्नर और टॉसजेन्डर में भेद होता है किन्नर वह होते है जो न तो स्त्री हो और न ही पुरूष। इनके जननांग ऐसे नही होते या पूर्ण रूप से विकसित इस प्रकार से नहीं हो पाते जिसके आधार पर इन्हें पुरूष या स्त्री की श्रेणी में रखा जा सके जबकि टॉसजेन्डर जन्मजात लड़का/लड़की होते है किन्तु बाद में उनका स्वभाव या आचरण जन्म से विपरीत लिंग के प्रति होता जाता है। ऐसे लोग स्वयं को अपने उस लिंग का नहीं मानते जिस लिंग के रूप में उनका जन्म हुआ हो जिसने सर्जरी द्वारा अपने लिंग का परिवर्तन किया हो

हमारे देश में (किन्नर, जोगता, जोगप्पा, सखी और आराधी सहित टॉसजेन्डर के सामाजिक – सांस्कृतिक समूह है।

इतिहास में इनका लगभग 4000 वर्ष पूर्व से उल्लेख मिलता है पौराणिक काल सहित हमारे वैदिक साहित्य में ''नपुंसक'' का उल्लेख है प्राचीन हिन्दी धर्मग्रन्थ कामशास्त्र जिसमें उन्हें 'तृतीया प्रकृति' या 'तीसरे लिंग' के रूप में वर्णित किया गया है भगवान शिव का अर्धनारी स्वरूप किन्नर समुदाय में पूजित है, हमारे पौराणिक गाथाओं मे ं कई स्थानों में पुरूष देवताओं का स्त्री रूप धारण कर कार्य करते हुये बताया गया है।

यदि तथ्यों का विश्लेषण करें तो पायेगें टांसजेन्डर, अगर यह एक विकार था तो यह एक समय के बाद खत्म हो जाता, क्योकि कोई विकार हमेशा के लिये नहीं होता इसका अर्थ है किंनर और मादा के पास किसी अन्य प्राणी को जन्म देने की शक्ति है। जो मानव शरीर के समान संरचना बन गयी है। ये विशिष्ट संरचना वाले बलिष्ट भी होते है। वेदो, पुराणों में ऋषि पत्नियों के गर्भ से पक्षी, सर्प, वानर इत्यादि संरचना वाले प्राणियों की जन्म गाथायें हम सुनते रहे है।

जैन ग्रन्थकार नेमिचन्द्राचार्य ने ''गोम्मटसार'' (जीवकांड–गाथा 271–276) में नपुंसक शब्द का उल्लेख किया है

हिमालय का पवित्र शिखर कैलाश किन्नरों का प्रधान स्थान माना जाता है। जहां वे भगवान भोले की सेवा करते थे। उन्हें देवताओं का गायक और भक्त माना जाता था। ये यक्षों और गन्धवो की तरह नृत्य और संगीत में प्रवीण होते थे। पुराणों के अनुसार ये कृष्ण का दर्शन करने द्वारका भी गए थे। भीम ने महाभारत के शांति पर्व में वर्णन किया है कि किन्नर बहुत सदाचारी होते है। आज ंतक के भित्ति चित्रों में गुहिरियकों, कीरातों और किन्नरों के भी चित्र है। महाकवि कालिदास के ग्रन्थ 'कुमारसम्भव' के प्रथम सर्ग के श्लोक 11 और 14 में भी किन्नरों का मनोहारी वर्णन है। चाणक्य ने भी अर्थशास्त्र में किन्नरों का उल्लेख किया है। मध्यकालीन इतिहास में मुस्लिम शासकों द्वारा रानियों की पहरेदारी के लिये किन्नरों को रखा जाता था।

1. भगवान राम ने किन्नरों की भक्ति से प्रभावित होकर उनको बच्चे के जन्म और विवाह जैसे शुभ अवसरों पर लोगों को आर्शीवाद देने की शक्ति प्रदान की।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

हिन्दू पौराणिक कथाओं में बहुचरा मात, जो एक हिन्दू देवी है। इनको भारत में किन्नर समुदाय का संरक्षक माना जाता है। महाभारत के एक पात्र अरावल किन्नर समाज के देवता माने जाते हैं, इरावन अर्जुन और उनकी पत्नी नाग कन्या उलूपी की संतान है जो अरावल के नाम से प्रसिद्ध है। किन्नर अपने ही देवता से एक रात के लिये शादी करते है। किन्नरो के रीति रिवाज परम्पराये आज भी समाज के लिये रहस्यमय बने हुये है। उनकी समाज में स्वीकार्यता ही सबसे जटिल प्रश्न है। 18 वीं शताब्दी से पूर्व तक ये शासन में भी महत्वपूर्ण स्थान रखते थे शाही दरवारों और अन्य संस्थानों में इन किन्नरों की स्थिति को देखकर ब्रिटिश घृणा करते थे। वे समझ नहीं पाते थे कि इनको इतना सम्मान क्यूँ हैं ?

19 वीं सदी के उलरार्द्व में ब्रिटिश और पनिवेशिक प्रशासन ने सख्ती से किन्नर समुदाय को अपराधी घोषित करने और उन्हें नागरिक अधिकारों से वंचित करने की कोशिश की। इनको अलग जाति या जनजाति का माना जाता था। 'अपराधिक जनजाति अधिनियम 1871', इसमें वे सभी किन्नर शामिल थे जो बच्चों के अपहरण और बधियाकरण में शामिल थे और सार्वजनिक स्थानों पर नृत्य करने के लिये महिलाओ ं की तरह कपड़े पहनते थे। ऐसी गतिविधियों के लिये सजा दो साल तक की थी।

आजादी के बाद 1952 में इस कानून को निरस्त कर दिया गया था।

भारतीय समाज में वर्तमान टॉन्सजेंन्डर की संख्या लगभग 48 लाख है, (2011 की जनगणना) और इसमें केवल 46 प्रतिशत ही साक्षर थे। रोजगार और शिक्षा के अवसरों की कमी समाज द्वारा निम्न वर्ग के रूप में इनका बहिष्कार होने के कारण उनके आत्मसम्मान और आत्म विश्वास पर गहरा असर पड़ता है। उन्हें अपने ही घरों से बाहर निकाल दिया जाता है। समाज में टांन्सजेन्डर समुदाय के उत्पीड़न के कारण उनको नकारात्मक निर्णय लेने के लिये प्रेरित कर सकता है, जैसे कि खुद को नुकसान पहुचाना, आत्मघाती विचार आदि। ट्रांन्सजेन्डर को घ्रणा के साथ, अपराधों के साथ जोड़कर पुलिस विभाग भी असंवेदनशील होते है। केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा 2016 में ट्रांन्सजंन्डर के अधिकारों की रक्षा करने टॉसजेन्डर अधिकार रक्षा विधेयक लाया गया। इस विधेयक के लागू होने के कारण भारत में सभी ट्रांसजेन्डर्स को हर प्रकार से समानता का अधिकार मिलेगा साथ ही साथ समाज में उतनी ही सम्मान मिलेगा जैसा अन्य को। रोजगार शिक्षा, वोट देने डालने का अधिकार आदि के कारण ट्रांन्सजेंन्डर्स को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार जैसी आम सुविधाएं आसानी से मिलने लगी है, इसी प्रकार से तीसरे लिंग के रूप में पहचान मिली है। कुछ राज्य सरकारें ट्रांन्सजेन्डरों को व्यापार हेतु ब्याज मुक्त लोन देने का प्रावधान बना चुकी है। तमिलनाडु राज्य की सरकार इसके लिसे 25 प्रतिशत सब्सिडी भी देती है। बदलते परिवेश में टांसजेन्डर्स की स्थिति में निश्चित रूप से क्रन्तिकारी परिवर्तन हुआ है भारत में खुले तौर पर ट्रांसजेन्डर आई0ए0एस0 अधिकारी ऐश्वर्या रितुपर्णा बनी। प्रथिकायाशिनी प्रथमपुलिस अधिकारी तमिलनाडु में बनी। जोयिता मंडल भारत की पहली टांसजेन्डर जज, विद्या कांबले स्वाति विधान बरूआ अदि न्यायाधीश के पदों पर है। भारत के विभिन्न कार्य क्षेत्रों में ट्रांसजेन्डरों को काम उल्लखनीय

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 02, Issue 11, November 2023

है। लक्ष्मी भारत की पहली ट्रांसजेन्डर है जो संयुक्त राष्ट्र (2008) में जा चुकी है उनकी कृति 'मी हिजड़ा मी लक्ष्मी' विभिन्न भाषाओं में मिलती है किन्नरो के जीवन पर प्रदीप सौरभ के उपन्यास ''तीसरी ताली'' को लंदन में कथा यूके का प्रतिष्ठित इन्दु शर्मा कथा पुरस्कार मिल चुका है। महेन्द्र भीष्म कृत ''मै पायल'' हिन्दी का प्रथम जीवनी परक अपन्यास है, जिसे यथार्थ जीवन में किन्नर गुरू पायल सिंह, ने जिया है।

अन्य रचनाओं में नीरजा माधव की 'यमद्वीप', महेन्द्र भीष्म की 'किन्नर कथा' चित्रा मुदगल की रचना 'पो0–203 नाला सोपारा' आदि उल्लेखनीय है। विद्या स्माइली प्रथम पूर्णकालिक ट्रांसजेन्डर थिएटर कलाकार की आई एम सर्वानन विद्या नाम से आत्मकथा प्रकाशित हो चुकी है। समाज की रूढ़ीवादी सोच अब टांसजेन्डर्स के प्रति बदलने लगी है। हाल ही में छत्तीसगढ़ राज्य में 13 टांसजेन्डर्स को पुलिस आधिकारी के रूप में भर्ती किया गया है। भोपाल में 2017 में ट्रांसजेन्डर्स के लिये अलग शैचालय की स्थापना की गई। टांसजेन्डर समुदाय में सम्बन्ध में जो भी भ्रम व्याप्त है उन पर पर्यापत शोध की आवश्यकता है, उनकी भाषा सामाजिक व्यवहार, रहन–सहन, पूजा, त्योहार, वेश–भूषा और अन्य दबी–छिपी मान्यताओं पर भरपूर खोज की जानी चाहिए ताकि जो कुछ भी हमारे पूर्वाग्रह है। उनसे मुक्त हुआ जा सके।

''यहाँ घोषणा पत्रों के लुभावने बादे है ˙

विकास की परिभाषाओं में,

प्रदान की जा रही सुविधाओं और आरक्षण

किसी भी शारीरिककमी से पीड़ित लोगों को,

कही इस अवयव विशेष के अविकास के लिए

सहानुभूति भी नही है किसी के पास कोई दंड तय नहीं.....जमी हैं।''

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1. आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी (ऑनलाईन संस्करण)

2. देवदत्त पटनायक कृत 'शिखंड़ी'

3. दैनिक जागरण 28 अगस्त 2023

4. सम्पादकीय – द थर्ड सेक्स इकॉनामिक एंड पॉलिटकल वीकली

5. http/ कविता कोश .org